Postal Reg. No. : XXXXXXXXX

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 1

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 12

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

26 मई 2016 ई 18 शअबान 1437 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

मेरी तो यह हालत है कि मरने के करीब हो जाओं तब रोज़ा छोड़ता हूं तबीयत रोज़ा छोड़ने को नहीं चाहती । यह मुबारक दिन हैं और अल्लाह के फज़ल और रहमत के नाज़िल होने के दिन हैं।

उपदेश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

कुरआन की शिक्षा

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا كُتِبَ عَلَيۡكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيۡنَ مِنۡ قَبۡلِكُمۡ لَعَلَّكُمۡ تَتَّقُوۡنَ اَيَّامًا مَّعۡدُوۡدٰتٍ ؕ فَمَنۡ كَانَ مِنۡكُمۡ مَّرِيۡضًا اَوۡ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنۡ اَيَّامٍ اُخَرَ ؕ وَعَلَى الَّذِيۡنَ يُطِيۡقُوۡنَهٗ فِدۡيَةٌ طَعَامُ مِسۡكِيۡنٍ ؕ فَمَنۡ تَطَوَّعَ خَيۡرًا فَهُوَ خَيۡرٌ لَّهٗ ؕ وَاَنۡ تَصُوۡمُوۡا خَيۡرٌ لَّكُمۡ اِنۡ كُنۡتُمۡ تَعۡلَمُوۡنَ

(अलबक़रा: 184,185)

अनुवाद: हे वे लोगो जो ईमान लाये हो ! तुम पर रोज़े उसी प्रकार अनिवार्य कर दिये गये हैं जिस प्रकार तुम से पूर्ववर्ती लोगों पर अनिवार्य कर दिये गये थे ताकि तुम तक़वा धारण करो ।

गिनती के कुछ दिन हैं । अत: जो भी तुम में से रोगी हो अथवा यात्रा पर हो तो उसे चाहिए कि इतने दिनों के रोज़े दूसरे दिनों में पूरे करे । और जो लोग इसकी शक्ति रखते हों, उन पर एक दरिद्र को भोजन कराना फ़िद्य: (प्रायश्चित स्वरूप) है। अत: जो कोई भी अतिरिक्त पुण्य कर्म करे तो यह उसके लिए बहुत अच्छा है । और यदि तुम ज्ञान रखते हो तो तुम्हारा रोज़े रखना तुम्हारे लिए उत्तम है

हदीस की शिक्षा

عَنۡ اَبِیۡ هُرَيۡرَةَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡهُ قَالَ قَالَ رَسُوۡلُ اللّٰہِ صَلَّى اللّٰہُ عَلَيۡهِ وَسَلَّمَ قَالَ اللّٰہُ عَزَّ وَ جَلَّ كُلُّ عَمَلِ بۡنِ اٰدَمَ لَهٗ اِلَّا الصِّيَامَ فَاِنَّهٗ لِیۡ وَاَنَا اَجۡزِیۡ بِهٖ وَالصَّيَامُ جُنَّةٌ فَاِذَا كَانَ يَوۡمُ صَوۡمِ اَحَدِكُمۡ فَلَا يَرۡفُثۡ وَلَا يَصۡخَبۡ فَاِنۡ سَابَّهٗ اَحَدٌ اَوۡ قَاتَلَهٗ فَلۡيَقُلۡ اِنِّیۡ صَآئِمٌ وَالَّذِیۡ نَفۡسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهٖ لَخُلُوۡفُ فَمِ الصَّآئِمِ اَطۡيَبُ عِنۡدَ اللّٰہِ مِنۡ رِيۡحِ الۡمِسۡكِ لِلصَّآئِمِ فَرۡحَتَانِ يَفۡرَحُهُمَا ، اِذَا اَفۡطَرَ فَرِحَ ، وَاِذَا لَقِیَ رَبَّهٗ فَرِحَ بِصَوۡمِهٖ

(बुखारी किताब ालदम अध्याय हिल ीकोल इन्नी साईम इज़ाज़ुल शतम)

उपदेश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाह वर्णन है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह तआला फरमाता है मनुष्य के सब काम अपने लिए हैं मगर रोज़ा मेरे लिए है और मैं ख़ुद उसका बदला बनूंगा अर्थात उसकी इस भलाई के बदले में उसे अपना दीदार नसीब करूँगा। अल्लाह तआला फरमाता है रोज़ा एक ढाल है, अत: तुम में से जब किसी का रोज़ा हो तो न वह बेहूदा बातें करे न शोर तथा बुरे काम करे अगर इससे कोई गाली गलोच या लड़े झगड़े तो वह उत्तर दे कि मैंने तो रोज़ा रखा हुआ है। कसम है उस हस्ती की जिस के अधिकार में मुहम्मद की जान है! रोज़ेदार के मुँह की बू अल्लाह के निकट कस्तूरी से भी अधिक शुद्ध और सुखद है। क्योंकि उसने अपना यह हाल ख़ुदा तआला के लिए किया है। रोज़े रखने वाले के लिए दो खुशियां भाग्य में हैं एक ख़ुशी उसे उस समय होती है जब वह रोज़ा इफतार करता है और दूसरी तब होगी जब रोज़े के कारण से उसे अल्लाह की मुलाकात नसीब होगी।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

""रमज़" सूरज की तपिश को कहते हैं। रमज़ान में चूंकि मनुष्य खाने पीने और सभी भौतिक सुख पर धैर्य करता है। दूसरे अल्लाह तआला के आदेशों के लिए एक गर्मी और जोश पैदा करता है। रूहानी और शारीरिक गर्मी और तपिश मिलकर रमज़ान हुआ। शब्दकोश वाले जो कहते हैं कि गर्मी के महीने में आया, इसलिए रमज़ान कहलाया, मेरे निकट यह उचित नहीं है। क्योंकि अरब के लिए यह विशेषता नहीं हो सकती। रूहानी "रमज़" से अभिप्राय ज़ौक शैक तथा धार्मिक गर्मी होती है। रमज़ इस गर्मी को भी कहते हैं, जिस से पत्थर गर्म हो जाते हैं।

(मल्फ़ूज़ात, भाग 1, पृष्ठ 136, संस्करण 2003 कादियान)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

रमज़ान का महीना मुबारक महीना है। दुआओं का महीना है।

तथा फरमाया: " मेरी तो यह हालत है कि मरने के करीब हो जाओं तब रोज़ा छोड़ता हूं तबीयत रोज़ा छोड़ने को नहीं चाहती । यह मुबारक दिन हैं और अल्लाह के फज़ल और रहमत के नाज़िल होने के दिन हैं। "

(मल्फ़ूज़ात, भाग 1, पृष्ठ 439, संस्करण 2003 कादियान)

☆ ☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सम्पादकीय

दावत इलल्लाह का महत्तव और इस के प्रमुख सिद्धान्त (भाग-3 अन्तिम भाग)

मुहम्मद हमीद कौसर

प्रिय भाइयो !!

सत्य को स्वीकार करना अत्यन्त कठिन होता है। आपके उस सम्बन्धी की स्थिति आध्यात्मिक तौर पर एक रोगी के समान है जो अगर इसी स्थिति में छोड़ दिया गया तो सय्यदना हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीस अनुसार "अग्नि के कुंड" में गिर जायेगा। हमारे प्यारे आक़ा सय्यदना हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दयालु हैं "रऊफ़" हैं हम उनके दास हैं। उस प्यारे आक़ा की रहमत हम से यह मांग करती है की हम अपने ग़ैर अहमदी भाइयों से किसी भी तरह सम्बन्धों के मध्य उत्पन्न हुई कड़वाहट को दूर करें और पवित्र क़ुरआन के इस आदेश का पालन करें।

فَاِذَا الَّذِیْ بَیْنَكَ وَ بَیْنَهٗ عَدَاوَةٌ كَاَنَّهٗ وَلِیٌّ حَمِیْمٌ

अर्थात् ऐसा व्यक्ति जिसके और तेरे मध्य शत्रुता थी वह अचानक प्राण देने वाला मित्र बन जायेगा। (सूर: हामीम अस्सज्दह : 35/41)

और इस रुकावट को दूर करने हेतु निम्नलिखित आदेशों का पालन करें:-

1. आप के सम्बंधियो, मित्रों, मुहल्ले वालों, साथ काम करने वालों में (ख़ुदा न करे) कोई बीमार हो जाए तो सय्यदना हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदेश (अयादतुल मरीज़)अनुसार उसका हाल चाल अवश्य पूछें तथा रोगी का हाल जानने के लिए अवश्य जायें तथा कहें की मैं आप के स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना करता हूँ अगर संभव हो तो क़ादियान तथा हुज़ूर अनवर ایدہ اللہ نصراعزیزا की सेवा मैं उस के स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना पत्र भिजवायें।

2. (ख़ुदा न करे) उन में से कोई किसी दुर्घटना या विपत्ति में घिर जाता है तब भी उससे मिल कर सहानुभूति व्यक्त करें। अत: उन्हें कहें कि मैं आप के लिए प्रार्थना करता हूँ जो भी कठिनाईयां हैं ख़ुदा उन से आप को शीघ्र ही निकाल दे। (ख़ुदा न करे किसी) की मृत्यु हो जाए तो उस के सम्बंधियो से दु:ख व्यक्त करें। सम्भवत: फोन ही कर दें।

3. उनकी ख़ुशी के अवसर पर जैसे शादी-ब्याह, बच्चे के जन्म, परीक्षाओं में सफलता इत्यादि मैं चाहे वह आप को न्योता दें या ना दें उन्हें मुबारकबाद (शुभकामना) का सन्देश मुलाक़ात करके अन्यथा फोन के द्वारा अवश्य भिजवाएँ। हमें उनकी मुक्ति तथा ईमान हेतु अपनी भावनाओं को अंतिम सीमा तक त्याग देना होगा। सय्यदना हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पवित्र जीवन का उदाहरण हमारे सामने है। क़ौम के ईमान ना लाने के कारण आप चिंता में रहते थे आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की चिन्ता का उल्लेख करते हुए अल्लाह तआला ने फ़रमाया : فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ अर्थात: क्या तू गंभीरता के कारण उनके पीछे अपने प्राण त्याग देगा अगर वह इस बात पर ईमान ना लाएं।

(सूर: अल कहफ़-7/18)

हम मैं से प्रत्येक को सय्यदना हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की विधि अनुसार दिन रात यह चिंता तथा कोशिश करनी चाहिए कि हमारे सम्बन्धी, मित्र, सय्यदना हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदेश का पालन करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर विश्वास के साथ ईमान ले आएं।

तीसरा सिद्धांत : आप जिस को तब्लीग़ करें पूर्ण विनम्रता के साथ करें। अल्लाह तआला का पवित्र क़ुरआन में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और हज़रत हारून अलैहिस्सलाम को आदेश है :

فَقُوْلَا لَهٗ قَوْلًا لَّیِّنًا لَّعَلَّهٗ یَتَذَكَّرُ اَوْ یَخْشٰی

अर्थात् विनम्रता से बात कहो हो सकता हे वह नसीहत पकड़े अथवा डर जाए। (सूर: ताहा 45/20)

यह भी संभव है की जिसे तब्लीग़ की जाती है वह कठोर शब्द तथा कभी कभी गाली-गलौच दे दे। ऐसे समय मैं विनम्रता तथा धैर्य धारण करें। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इस पंक्ति को याद रखें।

गालियां सुनकर दुआ दो पा के दु:ख आराम दो।
किब्र की आदत जो तुम देखो तुम दिखाओ इन्किसार।

चौथा सिद्धांत : प्रत्येक व्यक्ति जिसको तब्लीग़ की जा रही है उसके ज्ञान स्तर अनुसार उसको तब्लीगी पुस्तकें भेंट करें। एक या दो से अधिक पुस्तकें ना दें। इस बात को भी स्पष्ट कर दें की आप इन पुस्तकों का अध्ययन करें उसके पश्चात मैं आपको और पुस्तकें भेंट दे करूंगा।

पांचवा सिद्धान्त : उचित है की प्रत्येक अपने व्यवसाय अनुसार व्यक्ति को तब्लीग़ करे। डाक्टर डाक्टर को, वकील वकील को, इंजीनियर इंजीनियर को, विद्यार्थी विद्यार्थी को। इस बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह तआला अन्हो (दूसरे ख़लीफ़ा) फरमाते हैं।

"अपने वर्ग के लोगों को अहमदी बनाएँ, जमींदार जमींदार को अहमदी बनाएं। वकील वकीलों को, डाक्टर डाक्टरों को, इंजीनियर इंजीनियर को, बिल्डर बिल्डरों को, इस तरह कुछ ही वर्षों में बहुत बड़ा परिवर्तन उत्पन्न किया जा सकता है। इसी तरह वकील, बेरिस्टर, मजिस्ट्रेट तथा अन्य विद्वान लोगों की वृद्धि हो जाएगी। इस प्रकार के उच्च श्रेणी के विद्वान बहुत से अन्य लोगों के लिए चाबी के स्वरूप होते हैं। उनके प्रवेश से बहुत से अन्य लोग भी अपने आप प्रवेश कर जाते हैं। इस तरह से बहुत लाभ प्राप्त हो सकता है। यह सुझाव अत्यन्त गहरा प्रभाव डालने वाला है। मेरी इच्छा है कि जमाअत के मित्र इस और अत्यधिक ध्यान करें।"

(ख़ुत्ब: जुमअ: 8 फ़रवरी 1929, अल्फ़ज़्ल 15 फ़रवरी 1929)

छठा सिद्धान्त : जिद्दी तथा भेदभाव करने वाले मौलविओं से बचना ही उचित है। जिनका कार्य केवल जमाअत अहमदिया को झुटलाना ही है। ऐसे मौलवियों के बारे मैं सय्यदना हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सूचित किया था कि :

अर्थात् : उन के मौलवी आसमान के नीचे बसने वाले प्राणियों में सबसे दुष्ट प्राणी होंगे। उन में से ही फित्ने (क्लेश) उठेंगे तथा उन्ही में लौट जाएँगे।

(मिश्कात भाग:-इल्म)

सातवां सिद्धांत : वर्तमान युग में अल्लाह तआला ने जमाअत अहमदिया को M.T.A (जमाअत का निजी टेलीविज़न चैनल) तथा वेबसाइट्स www.alislam.org का माध्यम प्रदान किया है। दाई इलल्लाह जिसको तब्लीग़ कर रहे हैं उसको M.T.A लगाने की तरफ तहरीक कर सकते हैं तथा विद्वानों को वेबसाईट www.alislam.org से फायदा उठाने की और ध्यान दिलाएं।

आठवां सिद्धांत : तब्लीग़ का एक द्वार जलसा सालाना में शामिल होना है। जिनको तब्लीग़ की जा रही है उनको जलसा सालाना में अवश्य लाना चाहिए। अत: अगर वह किसी कारण जलसा सालाना पर न आ सकें तो किसी अन्य समय में उनको क़ादियान लाने यहाँ पर पवित्र स्थान दिखाने, विद्वानों से मुलाकात करवाने का कार्यक्रम बनाना चाहिए। तब्लीग़ के लिए यह बहुत उचित तरीका है।

नौवां सिद्धांत : जमाअत के केन्द्र "क़ादियान" से बहुत से समाचार पत्र, मासिक पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं। जिन को तब्लीग़ की जा रही है उन से यह पूछ लें की अगर वो पसंद करें तो यह पत्र तथा पत्रिकाएँ उनके नाम पर भी शुरू करवा दिए जाएँ। इनके अध्ययन से जमाअत के बारे में अत्यधिक जानकारी तथा सहयोग मिल सकता है। इस समय जो पत्र तथा पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं। निम्नलिखित हैं :- बदर उर्दू व हिंदी, मिश्कात (उर्दू), अन्सारुल्लाह (उर्दू एवं हिन्दी), रिविऊ आफ रिलीजन्ज़ (अंग्रेज़ी), राह-ए-इमान हिंदी इत्यादि।

दसवां सिद्धांत : प्रत्येक दाई इलल्लाह को सामान्यता (प्रत्येक समय) क्षेत्रीय भाषाओं एवं उर्दू, अंग्रेज़ी के LEAFLETS तथा अन्य महत्त्वपूर्ण पुस्तकें अपने पास रखनी चाहिएं। यात्रा करते समय प्रत्येक उपयुक्त व्यक्ति से पूछ लें कि मेरे पास यह LEAFLETS है क्या आप इसको पढ़ना पसंद करेंगे। जो सहमति देते हैं उन्हें अवश्य दें। अन्यथा जो सहमत न हो उन्हें यह बताएं

शेष पृष्ठ 7 पर

ख़ुत्बः जुमअः

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम कुछ सवाल करने वालों को सिलसिले के अन्य विद्वानों की ओर भेज दिया करते थे लेकिन कई सवाल हैं जो ज़ाहिरी तौर पर बहुत छोटे हैं इसमें सिलसिले के उलमा का भी आप सुधार किया करते थे। कई बार जब आप देखते कि इस मामले का समाधान किसी ऐसी बात से संबंधित है जहां बतौर मामूर आपके लिए दुनिया का मार्गदर्शन करना चाहिए तो ख़ुद वह मामला बता देते।

विभिन्न मौकों पर अलग मज्लिसों में जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़िक़्ही मामले वर्णन किए हैं उन्हें अब नज़ारत इशाअत पाकिस्तान ने बड़ी मेहनत से कुछ विद्वानों द्वारा जिन में जामिया के फिक्ह (न्यायशास्त्र) के प्रोफेसरों शामिल हैं और छात्रों को भी अपने माध्यम से जमा किए है यह किताब फिक्हुल मसीह के नाम से यहां छप गई है और जमाअत के दोस्तों को भी बहुत सारे मामलों में जानकारी के लिए यह किताब लेनी चाहिए।

सफर में नमाज़ कसर, नमाज़ जुम्अः के साथ असर की नमाज़ जमा करने की सीरत में जुम्अ की नमाज़ से पहले की सुन्नतों के पढ़ने, सफर में जुम्अः की अदायगी, विशेष अवसरों पर चिराग़ों के जलाने और आतिश बाज़ी इत्यादि के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की वर्णन की गई मार्ग दर्शन का वर्णन।

आदरणीया अमतु हफीज़ रहमान साहिबा पत्नी आदरणीय डाक्टर अताउर्रहमान साहिब(मरहूम) भुतपूर्व अमीर ज़िला साहिवाल की वफात. मरहूमा का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़,

दिनांक 22 अप्रैल 2016 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ ۔

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो एक बार यह विषय उल्लेख फरमा रहे थे कि मनुष्य के लिए दो चीज़ों की सफाई बहुत ज़रूरी है, जिन में से एक सोच और फिक्र है और दूसरी सूक्ष्म भावनाएं, नेकी की भावनाएं हैं और मानव के गहरी भावना अर्थात भावनाओं की हिस्स न कि अस्थायी भावनाएं जो कि दिलों की सफाई से पैदा होती हैं अर्थात स्थायी रहने वाली नेक और पवित्र भावनाएं उस समय पैदा होती हैं जब दिल पूरी तरह से साफ हो और विचारधारा की सफाई अर्थात विचार और सोच और विचार का हमेशा साफ रहना जिसे अरबी में "तनवीर" कहते हैं, दिमाग़ की सफाई से प्राप्त होती है। "तनवीर" इस बात को कहते हैं कि इंसान के अंदर ऐसा नूर पैदा हो जाए कि हमेशा सही विचार पैदा हो। "तनवीर" कोशिश कर के पवित्र विचार पैदा करना नहीं है बल्कि ऐसी आदत पैदा हो जाए कि हमेशा सही विचार पैदा होते रहें कभी कोई ग़लत प्रकार के विचार आए ही न। और ज़ाहिर है यह बातें लगातार प्रयास और अल्लाह की कृपा से ही पैदा होती हैं। बहरहाल इस बारे में आप हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हवाले से बयान फरमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से मैंने ख़ुद सुना है। कई बार जब आप से कोई फ़िक़्ही मामला पूछा जाता तो चूंकि यह मामला अधिकतर उन्हीं लोगों को याद होते हैं जो हर समय इसी काम में लगे रहते हैं। कभी-कभी आप फरमाया करते कि जाओ मौलवी नूरुद्दीन साहिब से पूछ लो या मौलवी अब्दुल करीम साहिब मरहूम का नाम लेते कि उनसे पूछ लो या मौलवी सय्यद अहसान साहिब का नाम लेकर फरमाते कि उनसे पूछ लो या किसी और मौलवी का नाम ले लेते। और कई बार जब आप देखते कि इस मामले का समाधान किसी ऐसी बात से संबंधित है जहां बतौर मामूर आपके लिए दुनिया का मार्गदर्शन करना चाहिए तो ख़ुद वह मामला बता देते मगर जब किसी मामले का आधुनिक सुधारों से संबंध न होता तो कह देते कि अमुक मौलवी साहिब से पूछ लें। और अगर वह मौलवी साहिब मज्लिस में ही बैठे होते तो उनसे फरमाते कि मौलवी साहिब यह मामला कैसे है। मगर कई बार ऐसा भी होता है कि जब आप फरमाते कि अमुक मौलवी साहिब से यह मामला पूछ लो तो साथ ही आप यह भी कहते कि हमारी फितरत यह कहती है कि यह मामला ऐसा होना चाहिए और फिर फरमाते कि हम ने तजुर्बा किया है कि बावजूद इसके कोई मामला हमें मालूम न हो तो उसके बारे में जो आवाज़ हमारी फितरत से उठे बाद में वह मामला इसी रंग में हदीस और सुन्नत से साबित होता है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद फरमाते हैं कि यह चीज़ है जो कि "तनवीर" कहलाती है तो "तनवीर" इस बात को कहते हैं कि मानव दिमाग़ में जो विचार भी पैदा हो वह भी सही हों। जिस तरह एक फिटनेस तो यह होती है कि आदमी कहे कि मैं इस समय स्वस्थ हूँ और एक फिटनेस यह होती है कि इंसान आगे भी स्वस्थ रहे तो "तनवीर" वह चिंता का सही होना है जिसके नतीजा में भविष्य में जो विचार भी पैदा हों सही हों। आप फरमाते हैं कि आध्यात्मिक विकास के लिए तनवीर की चिंता ज़रूरी होती है इसी तरह आध्यात्मिक विकास के लिए तक्वा और पवित्रता की आवश्यकता है और तथ्य यह है कि जो "तनवीर" के अर्थ दिमाग़ के बारे में हैं वही तक्वा के अर्थ दिल के बारे में हैं। लोग आमतौर पर नेकी और तक्वा को एक चीज़ समझते हैं हालांकि नेकी वह नेक काम है जो हम कर चुके हैं या करने का इरादा रखते हैं और तक्वा यह है कि इंसान के अंदर भविष्य में जो भावना भी पैदा हो वह नेक हों। तो जैसा कि उल्लेख किया चुका है कि चिंता सोच और विचार जिनका दिमाग़ से संबंध है यह "तनवीर" है और भावनाओं का नेकी पर हमेशा बने रहना तक्वा है उसका मामला दिल से है। जब भी किसी व्यक्ति को विचारधारा की "तनवीर" और दिल का तक्वा मिल जाए तो वह फिर बुराई के हमले से सुरक्षित रहता है और जब बुराई के हमले से सुरक्षित रहे तो ऐसा इंसान अल्लाह की कृपा के नीचे आ जाता है।

(उद्धरित अलफज़ल 9 मार्च 1938ई पृष्ठ 2 जिल्द 26 संख्या 55)

जैसा कि हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो ने फरमाया कि सामान्य मामलों में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम कुछ सवाल करने वालों को सिलसिले के अन्य विद्वानों की ओर भेज दिया करते थे लेकिन कई सवाल हैं जो ज़ाहिरी तौर पर बहुत छोटे हैं इसमें आप सिलसिले के उलमा का भी सुधार किया करते थे। जैसे सफरों में नमाज़ कसर कम करने का मामला है। इस सवाल पर कि किस को सफर समझा जाए और कसर नमाज़ के आदेश का पालन किया जाए, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि मेरा धर्म है कि इंसान बहुत दिक्कतें अपने ऊपर न डाल ले,(मुश्किलें अपने ऊपर न डाले।) जन सामान्य में जिसे सफर कहते हैं चाहे वह दो तीन मील ही हो इस में कसर और सफर के मामलों पर अमल करे। इन्नमल आमालो बिन्निय्यात। फरमाया कि कई बार हम दो दो तीन मील अपने दोस्तों के साथ सैर करते हुए चले जाते हैं मगर किसी के दिल में ख्याल नहीं आता कि हम सफर में हैं लेकिन जब इंसान अपनी गठरी उठाकर सफर के इरादे से चल पड़ता है अपना सामान उठाकर चल पड़ता है तो वह मुसाफिर है। आपने फरमाया कि शरीयत का आधार कठिनाई पर नहीं है जिसे तुम जन साधारण में सफर समझो वही सफर है।

(मल्फूज़ात भाग 2पृष्ठ 211 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

तो यह बात इस से स्पष्ट हो जाती है कि सफर वह है जो आप सफर के इरादे से करें। पिछले दिनों यहाँ एक मस्जिद के उद्घाटन में शायद लिसटर (Leicester) की मसजिद के उद्घाटन के लिए गया था। वहां मैंने ईशा की नमाज़ पूरी पढ़ाई। इस पर कुछ लोगों को सवाल पैदा हुआ कि कसर नहीं करवाई गई। इस समय मेरे मन में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का यही इरशाद था कि गठरी उठा कर सफर के इरादे से जब तुम सफर करते हो तो वह सफर है और क्योंकि इस प्रकार का सफर नहीं था और इसी समय मैंने वापस आ जाना था इसलिए मैंने कसर नहीं किया था। फिर इन्नमल आमालो बिन्निय्यात को भी सामने रखें। अगर यह सामने हो तो न ही मनुष्य अधिक दिक्कतें अपने ऊपर डालता है न आवश्यकता से अधिक सुविधा की खोज करता है बल्कि उद्देश्य अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञाओं का पालन करना होता है।

इस को और अधिक विस्तार से वर्णन करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक जगह फरमाते हैं कि हां ....अपनी नीयत को ख़ूब देख लो। ऐसी सभी बातों में तक्वा का बहुत ध्यान रखना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति हर दिन मामूली व्यवसाय या सफर के लिए जाता है तो वह सफर नहीं है बल्कि सफर वह है जिसे इंसान विशेष रूप से धारण करे और केवल इसी काम के लिए घर छोड़ कर जाए और जन साधारण में वह सफर कहलाता हो। देखो यूं तो हम हर रोज़ टहलने के लिए दो-दो मील निकल जाते हैं मगर यह सफर नहीं है ऐसे मौके पर दिल की संतुष्टि को देख लेना चाहिए कि अगर वह बिना किसी संकोच के फतवा दे कि यह सफर है तो कसर करो। "इस्तफत कलबक।" (कि अपने दिल से फतवा हासिल करो।) फिर व्यवहार चाहिए। फिर फरमाया कि हज़ार फतवा हो फिर भी मोमिन का नेक निय्यत से हार्दिक संतोष उत्कृष्ट चीज़ है।

(मल्फूज़ात भाग 10 पृष्ठ 99-100 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

इसलिए निय्यत और अपने दिल का फतवा भी कुछ अवसर पर ले लेना चाहिए। नेक निय्यत (इरादा) होनी चाहिए और इस नेक निय्यत के साथ दिल से फतवा लिया जाए।

किसी ने सवाल किया कि जो व्यक्ति यहां केंद्र में आता है वह कसर करे या नहीं। यह सवाल हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से किया गया और अब भी कुछ लोग करते हैं कुछ लोगों को लगता है कि केंद्र में जाने पर कसर नहीं है कादियान या रबवा जब जाते थे या यहाँ कुछ लोग आते हैं। तो आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि जो व्यक्ति तीन दिन के लिए यहाँ आए इसके लिए कसर जायज़ (वैध) है। मेरी समझ में जिस सफर में सफर की निय्यत हो फिर चाहे वह तीन चार कोस ही का सफर क्यों न हो उस में कसर जायज़ है। हां अगर इमाम स्थायी हो तो उसके पीछे पूरी नमाज़ पढ़नी होगी। तो स्थानीय तौर से जहां भी जा रहे हैं, केंद्र है या कहीं भी इमाम नमाज़ पढ़ा रहा है तो वह वहां का रहने वाला इमाम है तो बहरहाल वह पूरी नमाज़ पढ़ाएगा और मुसाफिर भी उसके पीछे पूरी नमाज़ पढ़ेगा। फरमाया कि अधिकारियों का दौरा सफर नहीं होता। जो लोग दौरे पर जाते हैं, अधिकारी हैं उन का सफर, सफर नहीं होता। वह ऐसा ही है जैसे कोई अपने बाग़ की सैर करता है। ख्वामख्वाह सफर का तो कोई वजूद ही नहीं।

(मल्फूज़ात भाग 5 पृष्ठ 311 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने सहाबा कि कई बार मामलों के बारे में कैसे सुधार कर दिया करते थे, इस बारे में काज़ी अमीर हुसैन साहिब वर्णन फरमाते हैं कि मैं शुरू में इस बात को मानता था कि सफर में कसर नमाज़ सामान्य परिस्थितियों में उचित नहीं बल्कि युद्ध की स्थिति में उपद्रव के डर से जायज़ है और इस मामले में हज़रत ख़लीफा प्रथम के साथ विवाद किया करता था। काज़ी साहिब कहते हैं कि जिन दिनों में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का गुरदासपुर का मुकदमा था। एक बार में भी वहाँ गया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ वहां मौलवी साहिब यानी हज़रत ख़लीफतुल मसीह अव्वल और मौलवी अब्दुल करीम साहिब भी थे। मगर ज़ुहर की नमाज़ का समय आया तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मुझे फरमाया कि आप नमाज़ पढ़ाएं। अर्थात काज़ी साहिब को कहा। कहते हैं कि मैं ने मन में दृढ़ निश्चय किया कि आज मुझे मौका मिला है कसर नहीं पढ़ूंगा बल्कि पूरी पढ़ूंगा तो इस मामले का कुछ फैसला हो जाएगा। जब पढ़ लूँगा आप ही हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फतवा देंगे। काज़ी साहिब बताते हैं कि मैंने यह फैसला करके अल्लाह अकबर कहने के लिए अब इरादे अभी हाथ उठाए ही थे और इस इरादे से उठाए थे कि कसर नहीं करूंगा। तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम मेरे पीछे दाईं ओर खड़े थे तो शीघ्र कदम बढ़ाकर आगे आए और मेरे कान के पास मुंह करके कहा। काज़ी साहिब दो ही पढ़ेंगे न ? तो मैंने कहा हुज़ूर दो ही पढ़ूंगा। बस तब से काजी साहिब कहते हैं बस इस समय से हमारा मामला हल हो गया और मैंने अपना विचार छोड़ दिया।

(उद्धरित सीरतुल महदी भाग 1 पृष्ठ 24-25 रिवायत नम्बर 33)

तो इस तरह सहाबा का व्यवहार था। कैसे खुले दिल के साथ तुरंत निर्णय समाप्त कर दिया करते थे।

आंशिक रूप से यह भी बता दूं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने विभिन्न अवसरों पर फ़िक़्ही मामले वर्णन किए हुए हैं। यह नहीं कि हर मामला आप उलेमा की ओर फेर दिया करते थे, ख़ुद भी उल्लेख किया करते थे। इन सभी विभिन्न मौकों पर अलग मज्लिसों में जो आप ने फ़िक़्ही मामले वर्णन किए हैं उन्हें अब नज़ारत इशाअत पाकिस्तान ने बड़ी मेहनत से कुछ विद्वानों द्वारा जमा किया है जिन में जामिया के फिक्ह (न्यायशास्त्र) के प्रोफेसर और छात्र शामिल हैं यह किताब फिक्हुल मसीह के नाम से यहां छप गई है और जमाअत के दोस्तों को भी बहुत सारे जो मामले हैं उनसे जागरूकता के लिए यह किताब लेनी चाहिए। अल्लाह तआला उन लोगों को भी बदला दे जिन्होंने ये बातें या ऐसे फ़िक़्ही मामले जमा किए किए हैं और बड़े अच्छे ढंग से इकट्ठा और संपादन किए हैं। बहरहाल समय-समय पर मुझे भी मौका मिला तो यह मामले बयान करता रहूंगा।

जुम्अ: की नमाज़ के साथ अगर असर की नमाज़ जमा की जाए तो जुमअ: की नमाज़ से पहले सुन्नतें पढ़नी चाहिए। इस बारे में स्पष्टीकरण करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद फरमाते हैं कि मुझ से एक सवाल किया गया है। हज़रत मुस्लेह मौऊद सफर में थे वहाँ सवाल किया कि अब जुमअ: की नमाज़ के समय कुछ दोस्तों में मतभेद हुआ है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का फतवा है कि अगर नमाज़ें जमा की जाएं तो पहली पिछली और बीच की सुन्नतें माफ होती हैं। इस में शक नहीं कि जब नमाज़ ज़ोहर व असर जमा हो तो पहली और मध्य सुन्नतें माफ होती हैं या अगर नमाज़ मग़रिब और इशा जमा हो तो मध्य और अंतिम सुन्नतें माफ हो जाएंगी लेकिन आप फरमाते हैं कि मतभेद यह किया गया है कि एक दोस्त ने यह बयान दिया है कि वह एक सफर में मेरे साथ थे यानी हज़रत मुस्लेह मौऊद के। मैंने जुमअ: और असर की नमाज़ें जमा करके पढ़ीं और जुमअ: की पहली सुन्नतें भी पढ़ीं। ये दोनों बातें सही हैं। नमाज़ों के जमा होने के मामले में सुन्नतें माफ हो जाती हैं यह बात भी सही है और यह भी सही है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जुमअ: की नमाज़ से पहले जो सुन्नतें हैं वह पढ़ा करते थे। मैंने वह सफर में पढ़ी हैं और पढ़ता हूँ और इसका कारण यह है कि जुमअ: की नमाज़ से पहले जो नफल पढ़े जाते हैं वह नमाज़ ज़ुहर के पहली सुन्नतों से अलग हैं। उन्हें दरअसल रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जुम्अ: के सम्मान में स्थापित किया है।

सफर में जुम्अ: की नमाज़ पढ़ना भी जायज़ है और छोड़ना भी जायज़ है। यानी अगर आदमी सफर में हो तो जुमअ: की नमाज़ भी पढ़ सकता है और छोड़ भी सकता है और छोड़ने का मतलब यह नहीं कि नमाज़ छोड़ दी बल्कि ज़ुहर की नमाज़ पढ़े। आप फरमाते हैं कि मैंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को सफर में जुमअ: पढ़ते देखा है और छोड़ते भी देखा है। एक बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक मुकदमा के अवसर पर गुरदासपुर तशरीफ़ ले गए थे और वहां व्यस्तता थी। आप ने फरमाया कि आज जुमअ: नहीं होगा क्योंकि हम सफर पर हैं। एक साहिब जिनकी तबीयत में बे-तकल्लुफी थी। वह आपके पास आए और निवेदन किया कि सुना है हुज़ूर ने फरमाया है कि आज जुम्अ: नहीं होगा। हज़रत ख़लीफतुल मसीह अव्वल यूं तो इन दिनों गुरदासपुर में ही थे मगर उस दिन किसी काम के लिए कादियान आए थे तो उन साहिब ने सोचा कि शायद जुमअ: न पढ़े जाने का इरशाद आप ने इसलिए फरमाया है कि मौलवी साहिब यहाँ नहीं हैं। वह जुम्अ: पढ़ाया करते थे। इसलिए फरमाया कि हुज़ूर ! मुझे भी जुम्अ: पढ़ाना आता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया हां आता होगा मगर हम तो सफर पर हैं इसलिए आज ज़ुहर की नमाज़ पढ़ रहे हैं। इन साहिब ने कहा कि हुज़ूर! मुझे अच्छी तरह जुम्अ: पढ़ाना आता है और मैंने बहुत बार पढ़ाया भी है। इस पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जब देखा कि इन साहिब को जुम्अ: पढ़ाने की बहुत इच्छा है तो फ़रमाया कि अच्छा आज जुम्अ: हो जाए।

हज़रत मुस्लेह मौऊद फरमाते हैं कि मैंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को सफर के अवसर पर जुमअ: पढ़ते भी देखा है और छोड़ते भी देखा है। जब सफर में जुम्अ: पढ़ा जाए तो मैं पहली सुन्नतें पढ़ा करता हों और मेरी राय यही है कि वे पढ़ना

चाहिए और यही सामान्यतया फतवा है क्योंकि वे साधारण सुन्नत से अलग हैं और जुमअ: के सम्मान के रूप में हैं।(अल्फज़ल 24 जनवरी 1942 ई पृष्ठ 1 जिल्द 20 संख्या 21) तो अगर जुमअ: पढ़ा जा रहा है तो फिर जुम्अ: और असर जमा होने के मामले में भी दो रकअत सुन्नत जो जुम्अ: से पहले पढ़ी जाती हैं वह पढ़ने चाहिए।

मानव जीवन में ख़ुशी के अवसर व्यक्तिगत भी आते हैं, सामूहिक भी आते हैं और देश के भी आते हैं और ख़ुशी के मौकों पर उनकी अभिव्यक्ति भी होती है लेकिन कुछ लोग इस में सीमा से बढ़ जाना और कम होने के शिकार हो जाते हैं। या ख़ुशी के प्रकट करने पर भारी खर्च किया जाता है या धर्म के बारे में या किसी और नाम से बिल्कुल ही बाहरी अभिव्यक्ति को गुनाह समझा जाता है। इस्लाम दोनों मामलों को नकारता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जो इस ज़माने में हमें इस्लामी शिक्षा के अनुसार मध्य मार्ग पर चलाने आए। आप ने हमें हर छोटी बात के बारे में भी, धार्मिक मामलों में भी और सांसारिक मामलों में भी मार्गदर्शन किया। नमाज़ का तो मैं ज़िक्र कर आया हूँ। अब एक बाहरी सांसारिक ख़ुशी के मौके पर कैसे व्यक्त होना चाहिए इस बारे में आप अलैहिस्सलाम ने किया मार्गदर्शन फरमाया। इस बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो ने जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की कर्म को हमारे सामने रखा है प्रस्तुत करता हूँ। आप फरमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से चिराग़ जलाना साबित है। यानी जब कोई खास मौका हो तो उसके उस पर चिराग़ जलाया जाता है और चिराग़ के बयान के कारण यह बना कि रानी विक्टोरिया की जुबली पर या किसी और मौके पर चिराग़ जलाए थे। हज़रत मुस्लेह मौऊद ने फरमाया कि लोगों ने तो रानी विक्टोरिया की जुबली पर भी रोशनी की था और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से रोशनी करना साबित है। आप ने दो बार रानी विक्टोरिया और शायद राजा एडवर्ड की जूबलियों पर रोशनी कराई या शायद दोनों जूबलियाँ रानी विक्टोरिया की ही थीं और मुझे ख़ूब याद है कि दोनों अवसरों पर रोशनी की गई। हज़रत मुस्लेह मौऊद फरमाते हैं चूंकि बचपन में ऐसी बातें अच्छी लगती हैं इसलिए मुझे अच्छी तरह याद है कि मस्जिद मुबारक के किनारों पर चिराग़ जलाए गए और बिनौले खत्म हुए। उस ज़माने में बिनौले जलाए जाते थे। तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने आदमी भेजा कि जा कर और लाओ। उन में तेल होता है वह तेल फिर काफी देर तक जलता रहता है। आप फरमाते हैं कि हमारे घर में भी, मस्जिद में और मदरसा में भी चिराग़ जलाए गए और मीर मुहम्मद इसहाक साहिब ने भी इस की गवाही दी है। इसलिए खाली चिराग़ के विरोध का तो सवाल ही पैदा नहीं होता। कुछ लोग कहते हैं चिराग़ जलाना ग़लत बात है। ऐसी कोई बात नहीं। आप फरमाते हैं कि मेरा विश्वास है कि आदेश और न्याय करने वाले की स्थिति में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम कुरआन के आदेश के ख़िलाफ कोई बात नहीं करते थे और रोशनी करना आप से साबित है। इस बारे में गवाहियाँ भी मौजूद हैं और यह अल हकम अख़बार में भी यह दर्ज है। इसलिए विशेष रोशनी के बारे में कोई चर्चा नहीं कि क्यों किया जाए और किस लिए न किया जाए और कब किया जाए। फिज़ूल खर्ची है या अमुक अमुक।(बातें हैं) बहरहाल आप फरमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस रंग में जो ख़ुशी व्यक्त की वह अपने अंदर एक ज्ञान रखती है जैसा कि मोमिन की हर बात अपने अंदर ज्ञान रखती है। रोशनी जब कि विशेष रूप से बड़े स्तर की हो और हर घर में करना आवश्यक कहा जाए। इस पर इतना खर्च आ जाता है कि इस से मुकाबला में कोई वास्तविक लाभ नजर नहीं आता। हां, जहां इसकी मुल्क के अनुसार और राजनीतिक ज़रूरत हो या जहां अधिक प्रकाश की आवश्यकता हो वहां अगर हो तो कोई परेशानी नहीं जैसा कि मीर मुहम्मद इस्हाक साहिब ने बताया कि रिवायतों में आता है कि हज़रत उमर के द्वारा मस्जिद में अधिक रोशनी का प्रबंध किया गया तो मीर साहिब ने उसका उदाहरण दिया कि मस्जिद में अत्यधिक प्रकाश व्यवस्था की गई थी और आप फ़रमाते हैं कि मस्जिद एक ऐसी जगह है जहां अधिक प्रकाश की ज़रूरत है क्योंकि लोग वहां कुरआन शरीफ पढ़ते हैं या धार्मिक पुस्तकें अध्ययन करते हैं। तो अगर हज़रत उमर ने मस्जिद में अधिक प्रकाश की व्यवस्था की तो इसमें हिकमत थी वरना जहां तक हम देखते हैं इस्लाम में ख़ुशियां ऐसे रंग में मनाई जाती हैं कि मानव जाति को अधिक से अधिक लाभ पहुंच सके जैसे ईद है इस में कुरबानी करने से ग़रीबों को मांस मिलता है ईद पर फितराना ग़रीबों की सहायता दी जाती है तो इस्लाम में जहां भी ख़ुशी मनाने का आदेश दिया है, ज़ोरदार दिया है कि उसे ऐसे रंग में मनाया जाए कि देश और मानवता को अधिक से अधिक लाभ हो लेकिन रोशनी के मामले में कोई ऐसा लाभ नहीं हो सकता। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने रोशनी कराई वह एक राजनीतिक हित पर आधारित था और इसी तरह कभी-कभी आप हमें आतिशबाजी भी ले दिया करते थे ताकि बच्चों का दिल ख़ुश हो और कहा करते थे कि सल्फर के जलने से रोगाणु मर जाते हैं। केवल बच्चों का दिल ख़ुश करने के लिए नहीं बल्कि आतिशबाजी में सल्फर होता है उसके जलने से हवा साफ होती है तो आप ने कई बार हमें अनार और फुलझड़ियां आदि मंगवा कर दीं। मानो एक प्रकार की बर्बादी है, लेकिन इस में अल्प कालीन लाभ भी है। यद्यपि ऐसा स्पष्ट नहीं मगर इससे बच्चों का दिल ख़ुश हो जाता था और बच्चों की भावनाओं को दबाने से जो नुकसान पहुंच सकता है उस से बचाव हो जाता था मगर आपने सारी जमाअत को आतिशबाजी चलाने का आदेश नहीं दिया।

(रिपोर्ट मज्लिस मुशावरत 7 से 9 अप्रैल 1939 ई पृष्ठ 74-75)

आप ने जमाअत को यह नहीं कहा कि आतिश बाज़ियाँ किया करो। अगर बच्चे कभी कभी कर लें तो कोई हर्ज नहीं और इस इरादे से किया जाए कि वातावरण भी साफ हो जाएगा तो दोनों चीजें मिल जाती हैं। बच्चे भी ख़ुश हो जाते हैं और वातावरण भी साफ हो जाता है। बच्चे अगर थोड़ी सा मनोरंजन कर लें तो कोई हर्ज नहीं है। उनकी भावनाओं को पूरी तरह दबाया न जाए। बच्चों में यह एहसास भी है कि उन्हें जो खेलकूद की उम्र है इस में इस्लाम उनके वैध मांगों को अस्वीकार नहीं करता। जैसे रोशनी है आतिशबाजी जहां उन्हें देश की सामूहिक ख़ुशी में ये बातें शामिल करती हैंय उनसे देश से एक संबंध व्यक्त भी होता है और बच्चों का मनोरंजन भी हो जाता है। इसलिए स्थान के अनुसार, मामले और सीमा में रहते हुए कोई कार्य करने में कोई हर्ज नहीं है लेकिन यह बच्चों में बचपन से ही स्पष्ट कर देना चाहिए कि इस्लामी शिक्षा के क्षेत्र और देश के कानून के दायरे के अंदर रहकर ही हम ये सारी बातें करते और करेंगे।

हज़रत मुस्लेह मौऊद अपने बचपन की दो घटनाओं का वर्णन करते हुए फरमाते हैं कि मुझे हमेशा याद है मैं छोटा बच्चा था कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक बार मुल्तान तशरीफ़ ले गए। मैं भी आप के साथ था। मेरी उम्र उस समय सात आठ साल की थी। उस सफर की केवल दो घटनाएं मुझे याद हैं। आप फरमाते हैं यूं तो कुछ घटनाएं मुझे तब की भी याद हैं जब मेरी उम्र केवल दो साल की थी बल्कि एक दोस्त ने एक घटना से याद कराया और मुझे वह याद आ गई उस समय मेरी उम्र सिर्फ एक साल थी। तो आप फरमाते हैं कि मुझे छोटी उम्र की भी कुछ घटनाए याद हैं लेकिन इस सफर की केवल दो बातें मेरे मन में हैं। पहली बात तो यह है कि वापसी पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम लाहौर ठहरे। वहाँ इन दिनों मोम की तस्वीरें दिखाई जा रही थीं अर्थात मोम से तस्वीरें बनाई जाती थीं या मूर्ति बनाई जाती थी। जिन से विभिन्न राजाओं और उनके दरबारों के हालात बताए जाते थे। शेख रहमतुल्ला साहिब मालिक इंग्लिश वेयर हाउस जो उन दिनों बॉम्बे हाउस कहलाता था उन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से निवेदन किया कि यह एक वैज्ञानिक बात है। ऐसी ज्ञान वर्धक बात है इतिहास के बारे में बताया जाता है ज्ञान बढ़ाने वाली बात है आप इसे देखने के लिए पधारें मगर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इनकार कर दिया। इसके बाद उन्होंने मुझ पर ज़ोर देना शुरू कर दिया कि चल कर वह मोम की प्रतिमा देखूँ। मैं चूंकि बच्चा था हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पीछे पड़ गया कि मुझे यह मुर्ति दिखाई जाएं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम मेरे आग्रह पर मुझे अपने साथ ले गए। विभिन्न राजाओं के हालात तस्वीरों के माध्यम से दिखाए गए थे। जिन में कुछ की मौतों और कुछ के रोगों आदि का नक्शा खींचा गया था। इसलिए फरमाया एक तो यह घटना मुझे याद है। अब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हामी भी इसलिए भरी और केवल इसलिए लेकर गए कि कई लोगों ने इसकी सराहना की थी कि यह एक वैज्ञानिक और ऐतिहासिक बात है यह देखने में कोई हर्ज नहीं। केवल बच्चे की ज़िद को देखकर नहीं चले गए थे। अगर आपको लगता है कि यह एक ऐसी बात है जो इस्लामी शिक्षा के ख़िलाफ है तो बेशक बच्चा ज़िद करता लेकिन न जाते। तो एक वैज्ञानिक बात थी इसलिए आप बच्चे को साथ ले कर देखने के लिए चले गए।

हज़रत मुस्लेह मौऊद फरमाते हैं कि दूसरी घटना जो मुझे याद है वह यह है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की लाहौर के अंदर किसी ने दावत की और इस में शामिल होने के लिए तशरीफ़ ले गए। कुछ प्रभाव मेरे दिल में यह भी है कि दावत नहीं थी बल्कि मुफ्ती मुहम्मद सादिक साहिब या उनका कोई बच्चा बीमार था और आप इसे देखने के लिए तशरीफ़ ले गए थे बहरहाल शहर के अंदर से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम वापस आ रहे थे कि सुनहरी मस्जिद की सीढ़ियों के पास में एक बड़ा हुजूम देखा जो गालियां दे रहा था और एक व्यक्ति उनके बीच खड़ा था। संभव है वह कोई मौलवी हो और जैसे मौलवियों की आदत होती है वह

शायद अपनी ओर से अवसर के बिना चुनौती दे रहा है। जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की गाड़ी पास से गुज़री तो भीड़ को देखकर मैं समझा कि यह भी कोई मेला है इसलिए मैंने नज़ारा देखने के लिए कार से अपना सिर बाहर निकाला। उस समय की यह घटना आज तक मुझे नहीं भूली कि मैंने देखा कि एक व्यक्ति जिसका हाथ कटा हुआ था और जिस पर हल्दी की पट्टी बंधी हुई थी वह बड़े उत्साह से अपने टुंडे हाथ से दूसरे हाथ पर मार कर कहता जा रहा था कि मिर्ज़ा दौड़ गया मिर्ज़ा दौड़ गया।

यह घटना एक और मामले में मैं पहले भी बयान कर चुका हूँ लेकिन यहाँ फरमाते हैं कि देखो एक व्यक्ति घायल है उसके हाथ पर पट्टी बंधी हुई हैं मगर वह विरोध के जोश में यह समझता है कि मैं अपने टुंडे हाथ से ही नऊज़ो बिल्लाह अहमदियत को समाप्त कर दूंगा या अहमदियत को दफन कर आऊँगा। यह कैसी ख़तरनाक दुश्मनी है, जो लोगों के दिलों में पाई जाती है और किस तरह उन्होंने ज़ोर लगाया कि लोग कादियान में न आएं और अहमदियत स्वीकार न करें। ऐसे कई लोग अहमदियों में मौजूद हैं जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में कादियान आने के इरादे से बटाला तक आए मगर फिर उन्हें मौलवी मोहम्मद हुसैन साहिब बटालवी ने वापस कर दिया। तो आप फरमाते हैं कि मैंने सुना है कि मौलवी अब्दुल माजिद साहिब भागलपुरी भी इसीलिए शुरू में अहमदियत स्वीकार करने से वंचित रह गए जब वह बटाला में आए तो मौलवी मोहम्मद हुसैन बटालवी ने उन्हें बहका कर वापस कर दिया और यही मौलवी मोहम्मद हुसैन साहिब बटालवी साहिब का दैनिक काम रहता था। वह हर दिन रेलवे स्टेशन पर जा पहुंचा करते और जब कुछ लोग कादियानी जाने के इरादे से उतरते तो उन्हें कहते कि वहां जाकर क्या लोगे। वहां गए तो ईमान ख़राब हो जाएगा और कई लोग उन्हें विद्वान समझ कर वापस चले जाते और विचार करते कि मौलवी मोहम्मद हुसैन साहिब जो कुछ कह रहे हैं यह सच ही होगा।

(उद्धरित अल्फज़ल 24 जनवरी 1946 ई पृष्ठ 3 जिल्द 31 संख्या 21)

तो यह सब कुछ मौलवियों के विरोध की वजह से था। उन्होंने जनता को भी इस हद तक भड़का दिया था कि वे टुंडा भी बेचारा नारे लगा रहा था। यह सब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का जो विरोध है उलेमा द्वारा उनकी अज्ञानता और निजी हितों के लिए था लेकिन लोगों को वे धर्म के नाम पर उकसा कर अपने लक्ष्य पूरे कर रहे थे हालांकि जिस बात को विरोध का माध्यम बनाया जा रहा था या बनाया जाता है आज तक यह उलेमा हैं लोगों को भड़काते हैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आए ही इस बात को स्थापित करने के लिए थे अर्थात इस्लाम की वास्तविक शिक्षा बताना और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के स्थान ख़तम नबुव्वत की स्थापना करना। आप तो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे आशिक थे और सच्चे ग़ुलाम थे। आप तो आए ही इसलिए थे कि दुनिया को बताएँ कि अब दुनिया का उद्धार अंतिम नबी और ख़ातमुल अंबिया हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के माध्यम से ही है लेकिन इन तथाकथित उलमा का यह दुर्भाग्य है कि बजाय आशिक रसूल के साथ जुड़ने के उसकी बात मानने के उस पर वह आरोप लगा रहे हैं कि नऊज़ो बिल्लाह यह ख़त्म नबुव्वत का इनकार करने वाले हैं या आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अपने रुतबे को बड़ा समझते हैं जबकि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का व्यवहार और शिक्षा का इन बातों से दूर का भी वास्ता नहीं है। आप अलैहिस्सलाम ने हर धर्म वाले को चुनौती दी कि अब मुक्ति का रास्ता केवल इस्लाम के मानने और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी में है।

बहरहाल यह उलेमा कोशिश करते रहे और जमाअत बढ़ती रही। अभी भी यह कोशिश कर रहे हैं और करते रहेंगे लेकिन अल्लाह तआला का यह फरमान है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस सच्चे ग़ुलाम की जमाअत ने बढ़ना है और बढ़ रही है और बढ़ती रहेगी इंशा अल्लाह।

अल्लाह तआला हमें भी तौफीक दे कि हम अपने अंदर वे वास्तविक परिवर्तन पैदा करें जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हम से चाहते हैं और असली मुसलमान बनें। अपने विचारों और सोचों में भी प्रकाश पैदा करें और अपने दिलों को भी तक्वा से भरें।

आज भी जुमअः के बाद एक नमाज़ जनाज़ा गायब पढ़ाऊंगा जो आदरणीया अमतुल हफीज़ रहमान साहिबा पत्नी आदरणीय डॉक्टर अता उर रहमान साहिब पूर्व अमीर ज़िला साहीवाल का है। 15 अप्रैल 2016 ई को उनकी वफात हुई। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन।

आप हज़रत मियां अज़ीमुल्लाह साहिब सहाबी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बहू और हज़रत शेख हुसैन बख़्श साहिब सहाबी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की नवासी थीं। आप के पिता श्री मलिक मुहम्मद खुर्शीद साहिब निर्माण कमेटी रबवा के प्रारंभिक सचिव थे। लंबे समय बतौर सदर लजना साहीवाल सेवा की तौफ़ीक़ पाई। बड़ा अल्लाह तआला पर भरोसा करने वाली, दुआ करने वाली, इबादत करने वाली, मेहमान नवाज़, गरीबों का ध्यान रखने वाली वित्तीय कुरबानी करने वाली, ख़िलाफत से वफ़ा का संबंध रखने वाली, धैर्य करने वाली महिला थीं। साहीवाल में अल्लाह तआला की राह में कैद होने की जब घटनाएं हुई हैं, तब कई लोग आप के मियां के पास मुलाकात के लिए आते थे। वह अमीर ज़िला थे उनकी मेहमानी करतीं। उनके पति डॉ अताउर रहमान साहिब लगभग चालीस साल तक जमाअत की सेवा करते रहे और उन्होंने बड़े अच्छे ढंग से उनका हाथ बटाया। केंद्र से आने वाले मेहमानों का भी बड़ा ध्यान रखतीं। सारी संतान इस रंग में प्रशिक्षण की है कि सब खिलाफ़त के साथ ईमानदारी और फिदाईत का गहरा संबंध रखते हैं। अल्लाह तआला की कृपा से मूसिया थीं उनके पांच बेटे और तीन बेटियां हैं। अल्लाह उनके वंश को भी नेकियों पर क़ायम करे और भविष्य की नस्लों को भी जमाअत के लिए उपयोगी वजूद बनाए।

☆ ☆ ☆

मैंने देखा कि इस से ला इलाहा इल्लल्लाह की आवाज़ आ रही है

सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा मस्रूर अहमद साहिब ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने 2004-2005 ई में अहमदिया जमाअत पर होने वाले अल्लाह तआला के फज़लों का वर्णन करते हुए जमाअत अहमदिया बरतानिया के 39 वें जलसा सालाना में ख़िताब करते हुए फरमाया:

"फिर हमारे मुबल्लिग़ साहिब लिखते हैं, 'रेडियो के दफतर में बैठा हुआ था कि एक बुजुर्ग आए जिनकी आंखों से आंसू बह रहे थे, मुंह से बोलना मुश्किल था। पानी आदि पिलाया तो कहने लगे कि मैं बैअत करना चाहता हूँ और बैअत फार्म भरने के बाद कहने लगे कि इस मुहल्ले में आज से करीब 15 साल पहले मिशन के पास ही का रहने वाला था। इस समय यहाँ एक बहुत ही पुराना और बहुत बड़ा पेड़ था जो कि 1994 ई में ही सूख कर गिर गया था। कहते हैं इस समय मैं ने एक सपना देखा था कि इस पेड़ के पास ही एक बहुत ऊंचा लोहे का खम्बा लगा हुआ है जो तारों के द्वारा जकड़ा हुआ है और डंडे के नीचे दो व्यक्ति बैठे हुए हैं जो कुछ बोलते हैं और डंडे से कुछ रोशनी पैदा होती है जो नीचे से ऊपर चला जाता है और ऊपर जाकर हरी किरणों में परिवर्तित हो जाती है और इस से लाइलाहा इल्लल्लाह की आवाज़ आ रही है और एक अजीब आध्यात्मिकता छाई हुई है। कहते हैं इस के बाद सपना खत्म हो गया। यह खुद भी एक समय में वहां से शिफ्ट कर गए, कहीं और चले गए। कहते हैं दो महीने पहले जब मैं वापस आया तो दूसरे मुहल्ले में था। वहाँ संयोग से उन्होंने एक दिन अहमदिया रेडियो सुना लेकिन उन्हें यह पता नहीं था कि रेडियो किस तरफ है? ख़ैर पूछ पूछ कर वह आए तो जब वह हमारे रेडियो सेंटर के पास पहुंचे तो रेडियो का जो एंटीना था, लंबा खम्बा नज़र आया और वह कहते हैं यह सब वैसा ही था जो दृश्य मैंने देखा था। और जब उन्होंने रेडियो स्टेशन में प्रवेश किया जो छोटे से दो कमरे हैं कोई इतना बड़ा रेडियो स्टेशन नहीं है। शायद दो कमरों का कुल आकार 12 × 12 का हो। तो बहरहाल कहते हैं इस कमरे में दो व्यक्ति बैठे हुए थे और उस समय रेडियो पर यह नज़म लगी हुई थी कि "है दस्त किबला नुमा लाइलाहा ाल्लाललह।" कहते हैं कि यह देख कर मैं आंसुओं से रोने लगा और पहले मैंने मस्जिद में जाकर शुकराने के दो नफिल पढ़े और फिर बैअत कर ली।

तो वहाँ कितनी दूर अल्लाह खुद ही संदेश पहुंचाने के सामान पैदा कर रहा है। जिन्हें यह कहते हैं कि यह ज्ञान से खाली हैं उन के ज्ञान के सामान ख़ुद अल्लाह तआला करता है और जिन को ये आलिम समझते हैं उनकी अकलों पर, आंखों पर पर्दे पड़े हुए हैं।

(साप्ताहिक अख़बार बदर 20 अगस्त 2015 ई पृष्ठ 20)

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

की इस LEAFLETS को पढ़ना आप के लिए अवश्य लाभदायक होगा। सहमति व्यक्त करने पर ही उन्हें दें। नहीं तो संभव है की वह इसको नष्ट कर दें। संभव हो तो उस से फोन नम्बर प्राप्त कर लें।

ग्यारहवां सिद्धांत : सय्यदना हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तथा इसी तरह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने अपने युग के राजा, महाराजाओं, उच्च श्रेणी के अधिकारियों को पत्र लिख कर तब्लीग़ की। वर्तमान युग में आप भी अपने संबधियों, मित्रों तथा नगर वासिओं को पत्र लिख कर तब्लीग़ करें। संभव है की जिन्हें आप तब्लीग़ी पत्र भिजवाएं उनके द्वारा उचित समर्थन प्राप्त ना हो। परन्तु उन्हें दुआ, नेक नसीहत के साथ तब्लीग़ करते रहना चाहिए। इंशा अल्लाह एक न एक दिन वह इस बात को समझ जाएंगे।

बारहवाँ सिद्धांत : अगर आप के नगर मैं स्थितियां अनुकूल हैं और कानून अनुमति देता है तो अपने नगर के किसी मार्ग पर दो या तीन मेज़ो पर LEAFLETS तथा जमाअती पुस्तकें रखें तथा प्रत्येक आने जाने वाले से निवेदन करें की वह इन पुस्तकों को देखें। इस के पश्चात उनको जमाअत के बारे में भी बताएं तथा उनके अनुरोध पर LEAFLETS अवश्य दें।

तेरहवाँ सिद्धांत : सेक्रेटरी साहब "दावत ए इलल्लाह" को चाहिए की वह माननीय अमीर साहिब के साथ विचार विमर्श करके वर्ष मैं कम से कम चार बार "यौम-ए-तब्लीग़" (तब्लीग़ी दिवस) मनाने का प्रस्ताव पारित करें तथा इसके लिए पहले से नियम बनाएं तथा वह क्षेत्र चुनें जहाँ तब्लीग़ करने का निर्णय किया है। दो दो, तीन तीन "दाइयान-ए-इलल्लाह" का ग्रुप बना कर संभावित क्षेत्र के हिस्सों में भिजवाएँ तथा "डाकिया" की भांति प्रत्येक घर पहुँचते हुए उन्हें LEAFLETS दें और यदि कोई व्यक्ति नाराज़गी (विरोध) करे तो उस से क्षमा याचना करें।

स्वयं मेरा अनुभव है की कई बार क्षमा याचना के द्वारा ही तब्लीग़ के मार्ग खुल जाते हैं।

चौद्हवां सिद्धांत : (क) अपने क्षेत्र के अनुभवी व्यक्तिजनों को दार-उल-तब्लीग़ या किसी अहमदी के घर पर आमन्त्रित करें तथा उनको हज़रत खलीफ़तुल मसीह अल ख़ामिस ایدہ اللہ تعالی (पांचवे ख़लीफा) का प्रोग्राम दिखाएँ।

(ख) फिर प्रश्नउतर की सभा का आयोजन करें।

पन्द्रहवां सिद्धांत : अपने क्षेत्र के मुख्य पुस्तकालयों में जमाअत का लिट्रेचर विशेष तौर पर पवित्र क़ुर्आन (अनुवाद सहित) तथा अन्य लिट्रेचर अवश्य रखवाएं। आज प्रत्येक स्कूल कालेज में पुस्तकालय बने हुए हैं और ग्रामीण पंचायतों में भी इनकी सुविधा उपलब्ध है।

इस सम्बन्ध मैं आप जो विधि उचित समझते हैं उसको भी अपनाएं। अल्लाह तआला हम सबको सफलतापूर्वक प्रचार करने की क्षमता प्रदान करे। अल्लाह तआला ने स्वयं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को यह वचन दिया है "मैं तेरी तब्लीग़ को ज़मीन के किनारों तक पहुँचाऊँगा।"

प्रचार तो अल्लाह तआला ने ही करना है। हम ने तो (रक्त लगा कर शहीदों में शामिल होने वाली उदाहरण के समान) प्रचार करके अल्लाह तआला से पुण्य प्राप्त करना है। इंशाल्लाह तआला।

अल्लाह तआला पर हमारी आस्था तथा यह पूर्ण विश्वास है जिस प्रकार उसने हमारे पूर्वजों के प्रचार कार्य में सहायता की थी उसी प्रकार हमारे इन प्रयत्नों को स्वीकार करते हुए अवश्य अच्छे परिणाम दिखाएगा।

हमें अल्लाह तआला के इस वचन पर विश्वास रखते हुए प्रचार करना है जो उसने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से किया था।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:-

"मैं तेरी तब्लीग़ को दुनिया के किनारों तक पहुँचाऊँगा।"

"दुनिया में एक नज़ीर (डराने वाला) आया पर दुनिया ने उसे क़बूल (स्वीकार) न किया। लेकिन ख़ुदा उसे क़बूल (स्वीकार) करेगा और बड़े ज़ोरआवर हमलों (प्रताप) से उसकी सच्चाई ज़ाहिर कर देगा।"

(तज़किरह पृष्ठ 148)

(अनुवादक शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

उम्मुल मौमेनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ि

(अनुवादक- आसमा तय्यबा, कादियान)

हज़रत उम्मे सलमा आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पत्नी थीं। आप का सम्बंध क़ुरैश के खानदान महजूम से था। आप रज़ि के पिता अबु उमेय्या अपने कबीले के सरदार थे और बहुत धनी थे। आप का नाम हिन्दा और उपनाम उम्मे सलमा था। आप रज़ि का पहला निकाह हज़रत अबदुल्लाह पुत्र अल असवद रज़ि के साथ हुआ था, जो अबु सलमा रज़ि. के नाम से प्रसिद्ध हैं। इस्लाम के आरम्भ में ही इन दोनों ने इस्लाम को क़बूल करने का सौभाग्य पाया। उहद की लड़ाई में हज़रत अबु सलमा घायल हुए और इन्हीं घावों के कारण सन 4 हिजरी में आप देहान्त पा गए। जब आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सांत्वना देने उनके घर गए तो हज़रत उम्मे सलमा रो रही थीं। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आपको तसल्ली दी धैर्य करने को कहा और यह दुआ पढ़ने को कहा कि "हे ख़ुदा तआला मुझे इस से अच्छा जानशीन प्रादान कर"। जब आप यह दुआ करतीं तो सोचतीं कि अबु सलमा से अच्छा कौन हो सकता है। हज़रत अबु सलमा की मृत्यु के समय आप गर्भवती थीं जब इद्दत (पति की मृत्यु के पश्चात एक विशेष समय सीमा जिस के बाद औरत पुन: निकाह सकती है) समाप्त हुई तो आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उमर फारुक रज़ि अल्लाह अन्हो के द्वारा हज़रत उम्मे सलमा रज़ि को निकाह का पैग़ाम भेजा। हज़रत उमर रज़ि अल्लाह अन्हो ने जब उनको पैग़ाम दिया तो हज़रत उम्मे सलमा ने कहा कि मेरी उम्र अधिक है और मेरे बच्चे भी हैं। जब आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने प्रसन्नता से आपको क़बूल करना चाहा तो आप इस निकाह के लिए तैयार हो गईं और अपने बेटे से कहा कि मेरा निकाह कर दो ।

हज़रत आयशा रज़ि. अल्लाह अन्हा वर्णन करती हैं कि मैंने हज़रत उम्मे सलमा की सुन्दरता की चर्चा सुनी थी लेकिन जब देखा तो उस से बढ़कर हसीन और सुन्दर पाया। आप रज़ि अल्लाह अन्हा बहुत बुद्धिमान थीं। सुलह हुदैबिया के समय आप भी आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ थीं। सुलह (मैत्री) की शर्तों के पश्चात आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब फर्माया कि मुस्लमान कुर्बानी दें तो क्योंकि देखने में शर्तें मुस्लमानों के विरुद्ध लग रहीं थीं, इसलिए गमग़ीन मुस्लमानों में से कोई भी कुर्बानी देने को तैयार न हुआ था। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उम्मे सलमा रज़ि को सारी घटना बताई तो आप रज़ि. ने कहा कि सहाबा हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदेश को अच्छी तरह समझ नहीं पाए। इसलिए हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम स्वयं कुर्बानी करें। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आपका परामर्श स्वीकार किया और अहराम (हज्ज के लिए पहने जाने वाले विशेष वस्त्र) उतारने के लिए बाल मुंडवा लिए। देखते ही देखते सारे मुसलमानों ने आपका अनुसरण करने लगे और अहराम उतारने आरम्भ कर दिए।

हज़रत उम्मे सलमा बहुत सादगी वाली औरत थीं। अत्यधिक इबादत करती थी। बहुत दान किया करती थीं। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पत्नियों में से हज़रत आयशा के पश्चात धार्मिक एवं संसारिक ज्ञान में आपका स्थान आता है। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के देहान्त के पश्चात सहाबा को जब भी कोई समस्या होती तो इन्हीं दोनों के पास जाया करते थे। हज़रत उम्मे सलमा हदीस का दर्स भी दिया करती थीं, जिस से बहुत से लोग लाभ उठाते थे। आप ने बहुत से अनाथ बच्चों को सहारा दिया और उनकी शादीयां करवाईं। ग़रीबों और विधवाओं की सहायता करना अपना कर्तव्य समझती थीं। आप ने आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इच्छा के विरुद्ध कभी कोई कार्य न किया। एक बार आपने एक ऐसा हार पहन लिया जिस में कुछ सोना भी था। जब आप रज़ि. अल्लाह अन्हा को यह पता चला कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस हार का पहनना अच्छा नहीं लगा, तो आप रज़ि. ने उसे उतार दिया। आप रज़ि. का देहान्त 36 हिजरी को 48 वर्ष की आयु में हुआ।

(पत्रिका इस्माईल जनवरी से मार्च 2013, पृष्ठ-22-23)

☆ ☆ ☆

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN XXX
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
PUNHIND 01885 Vol. 1 Thursday 26 May 2016 Issue No. 12

MANAGER : NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 300/-

समस्त मुसलमानों से दर्दभरी अपील

अहमदिया मुस्लिम जमाअत पूर्ण ईमान, विश्वास और पूर्ण मारिफ़त से हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ातमुन्नबिय्यीन मानती है।

विश्वव्यापी अहमदिया मुस्लिम जमाअत के विरुद्ध गत कुछ समय से विभिन्न अख़बारों में वस्तु स्थिति से भिन्न बयान दिए जा रहे हैं और यह प्रोपेगण्डा किया जा रहा है कि नऊज़ु बिल्लाह अहमदिया मुस्लिम जमाअत हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ातमुन्नबिय्यीन नहीं मानती है और इस कारण से जमाअत अहमदिया को इस्लाम के दायरे से बाहर किया गया है।

अख़बारों में प्रकाशित होने वाले ये आरोप सर्वथा ग़लत और निराधार हैं। अहमदिया मुस्लिम जमाअत पूर्ण ईमान, विश्वास और पूर्ण मारिफ़त (अध्यात्म ज्ञान) से हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ातमुलन्नबिय्यीन मानती है और इस बात को दिल-व-जान से घोषणा करती है कि क़ायनात के सरदार, मौजूदात के गर्व हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को ख़ातमुन्नबिय्यीन का जो ताज पहनाया है किस में शक्ति है कि वह आप से यह ताज छीन सके?

ख़ातमुन्नबिय्यीन हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भविष्यवाणी की थी कि चौदहवीं सदी में इमाम महदी का प्रादुर्भाव होगा और आपकी सच्चाई के लिए अल्लाह तआला चन्द्रमा और सूर्य ग्रहण के निशान प्रकट करेगा और आँ हज़रत मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बड़ा ज़ोर देकर यह आदेश दिया था कि जब इमाम महदी प्रकट हों तो उसकी बैअत करो। इस भविष्यवाणी के अनुसार हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम ने इमाम महदी-व-मसीह मौऊद होने का दावा किया और अल्लाह तआला ने आप की सच्चाई के लिए सच्चे खबर देने वाले आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार 1894 ई. और 1895 ई. में दो बार सूर्य एवं चन्द्र ग्रहण का निशान प्रकट किया। इसलिए आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदेश के पालन में युग के इमाम हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम की अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने बैअत की है और आपकी जमाअत में शामिल है।

*- थोड़ा विचार कीजिए! क्या ख़ातमुन्नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस ताकीदी आदेश पर ईमान लाने के परिणामस्वरूप अहमदिया मुस्लिम जमाअत के सदस्य काफ़िर हैं?

*- क्या ख़ुदा और रसूल के कथनानुसार ईमान के अर्कान पर ईमान लाना एक अहमदी मुसलमान को काफ़िर बनाता है?

*- क्या ख़ाना क़ाबा की तरफ मुँह करके नमाज़ पढ़ना एक अहमदी मुसलमान को काफ़िर बनाता है?

*- क्या अल्लाह तआला की ओर से रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियों के अनुसार एक दावेदार की सच्चाई में चन्द्रमा एवं सूर्य ग्रहण के निशान तथा अन्य असंख्य ज़मीनी और आकाशीय निशान प्रकट होने के परिणामस्वरूप उस पर ईमान लाना अहमदिया मुस्लिम जमाअत को इस्लाम के दायरे से बाहर करता है?

*- क्या ख़ुदा और रसूल के कथनानुसार इस्लाम के अर्कान पर अमल करना अहमदी मुसलमान को इस्लाम के दायरे से बाहर करता है?

*- क्या क़ुर्आन करीम को प्रकाशित करना और उससे संसार को परिचित कराना एक अहमदी मुसलमान को काफिर बनाता है?

*- क्या क़ुर्आन करीम के 73 देश की विभिन्न भाषाओं में अनुवाद प्रकाशित करना कुफ़्र है?

*- क्या रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को शान्ति के पैग़म्बर (दूत) के तौर पर संसार के सामने प्रस्तुत करना अहमदिया मुस्लिम जमाअत को काफिर बनाता है?

*- क्या रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जीवन चरित्र का प्रकाशन और आप की सुन्दर शिक्षाओं को संसारा तक पहुँचाना अहमदियों को काफ़िर बनाता है?

*- क्या रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को वास्तविक अर्थों में ख़ातमुन्नबिय्यीन स्वीकार करना एक अहमदी मुसलमान को काफ़िर बनाता है?

*- क्या यूरोप, एशिया, अफ्रीका और अमरीका में मस्जिदों का निर्माण करना अहमदी मुसलमान को काफ़िर बनाता है?

*- क्या सम्पूर्ण संसार में इस्लाम का प्रचार करते हुए लोगों को इस्लाम में लाना अहमदी मुसलमानों को काफ़िर बनाता है।

इसलिए सभी मुसलमानों से हमारी दर्द भरी अपील है कि ख़ुदा के लिए विचार करें कि कहीं उम्मत के सच्चे इमाम का इन्कारा करके ख़ुदा तआला और उसके रसूल की नाराज़गी का कारण न बन रहे हों।

जमाअत अहमदिया के प्रवर्तक स्पष्ट शब्दों में अपनी शिक्षाओं का खुलासा इन शब्दों में प्रस्तुत किया है कि ''हमारे धर्म का ख़ुलासा और निचोड़ यह है ''ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मद रसूलुल्लाह हमारी आस्था जो हम इस सांसारिक जीवन में रखते हैं जिसके साथ हम ख़ुदा के फ़ज़्ल और उसकी दी हुई सामर्थ्य से इस अस्थायी संसार से कूच करेंगे यह है कि हज़रत सय्यिदिना-व-मौलाना मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ख़ातमुन्नबिय्यीन-व-ख़ैरुल-मुरसलीन हैं, जिन के हाथ से धर्म पूर्ण हो चुका है और वह नेअमत पूर्णता प्राप्त कर चुकी जिसके द्वारा मनुष्य सद्मार्ग पर चल कर ख़ुदा तआला तक पहुँच सकता है और हम दृढ़ विश्वास के साथ इस बात पर ईमान रखते हैं कि पवित्र क़ुर्आन आकाशीय किताबों का खातम है और एक बिन्दु और उसकी सीमाओं तथा आदेशों से अधिक नहीं हो सकता और न कम हो सकता है।''

पवित्र क़ुर्आन की श्रेष्ठता और आँहज़रत के पवित्र जीवन चरित्र के बारे में अहमदिया मुस्लिम जमाअत की ओर से प्रकाशित ज्ञान तथा इर्फ़ान से भरपूर लिट्रेचर आपकी जानकारियों में आश्चर्यजनक वृद्धि करेगा और मूल वास्तविकता आप पर स्पष्ट हो जाएगी। जिसके लिए टोल फ्री नम्बर 1800-3010-2131 पर तथा वेब साइट www.alislam.org/www.mta.tv पर सम्पर्क करें।

☆ ☆ ☆

☆ ☆ Uci omnisitatur sunto intiis

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badr, at Fazle-Umar Printing Press Qadian, Harchowal Road Po. Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab, India. Editor Shaikh Mujahid Ahmad